

## भारतीय अर्थव्यवस्था की वैश्विक आर्थिक गतिविधियाँ

डॉ. बासंती मैथ्यू मेर्लिन<sup>1</sup>, डॉ. संगीता जौहरी<sup>2</sup>

<sup>1</sup>विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

<sup>2</sup>डीन, हुमेनिटिज – लिबरल आर्ट्स विभाग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

### सारांश

यह पेपर भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास प्रदर्शन और बचत और निवेश, उत्पादकता और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सहायक प्रदर्शन की समीक्षा करता है। वर्तमान समय में जब अनेक विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं अनिश्चितताओं का आवरण है, तब भारत कुछ बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच संभावनाओं के साथ उभरा है। यह गतिशील क्षेत्र राजकोषीय नीति और सेवा क्षेत्र विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर जीडीपी का अध्ययन औद्योगिक विकास कृषि क्षेत्र की चुनौती पर प्रकाश डालता है और हाल के दिनों में आय वृद्धि की संरचना पर टिप्पणी करता है। यह तेजी से आर्थिक विकास पर उभरती बाधाओं को भी इंगित करता है, उदाहरण के लिए, क्षेत्रीय और व्यक्तिगत असमानता में वृद्धि, बढ़ती बेरोजगारी, ढांचागत बाधाएं और राजकोषीय घाटा। यह आर्थिक विकास की संभावनाओं का आकलन करता है।

**मुख्य बिन्दु :-** भारतीय अर्थव्यवस्था की आर्थिक रणनीति चुनौतियाँ

### I प्रस्तावना

भारत मुख्य रूप से एक कृषि अर्थव्यवस्था है। भारत का लगभग 50 प्रतिशत कार्यबल कृषि गतिविधियों में शामिल है जो इसकी अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान देता है। हाल के एक सर्वेक्षण के अनुसार, सेवा क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था के 50 प्रतिशत से अधिक में योगदान दे रहा है। तीस वर्ष पूर्व वर्ष 1991 में शुरू किये गए उदारीकरण की नीति का वर्ष 2021 में 30 साल पूरे हो गए भारत के आर्थिक प्रतिष्ठान ने भारत की व्यापक आर्थिक बैलेंस शीट को सुधारने के लिये एवं विकास की गति को बढ़ाने के लिये एक बहुआयामी सुधार एजेंडा शुरू किया। तीन दशक बाद कोविड-19 महामारी के कारण देश की अर्थव्यवस्था के सामने एक और बड़ी परीक्षा सामने खड़ी है। 21वीं सदी के पहले दशक तक भारत को सबसे तेजी से उभरते बाजारों में से एक के रूप में देखा जाने लगा। भारतीय उद्यमियों की ऊर्जा को एक उपयुक्त मंच प्रदान किया। 21वीं सदी के पहले दशक तक भारत को सबसे तेजी से उभरते बाजारों में से एक के रूप में देखा जाने लगा। भारतीय उद्यमियों की ऊर्जा को एक उपयुक्त मंच प्रदान किया। देश की आजादी के कगार पर भारतीय अर्थव्यवस्था संकट में थी। एक उपनिवेश होने के कारण वह अपनी नहीं, बल्कि एक विदेशी भूमि की विकास आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही थी। राज्य, जिसे कृषि और उद्योग में सफलताओं के लिए जिम्मेदार होना चाहिए था, ने इस संबंध में एक छोटी सी भूमिका निभाने से भी इनकार कर दिया। दूसरी ओर, भारत की आजादी से पहले की आधी सदी के दौरान, दुनिया कृषि और उद्योग में त्वरित विकास और विस्तार देख रही थी – राज्यों द्वारा सक्रिय भूमिका निभाने के लिए।

स्वतंत्रता के दौरान, भारत की साक्षरता 32.5 वर्ष की जीवन प्रत्याशा के साथ केवल 17 प्रतिशत थी। इसलिए, भारत के स्वतंत्र होने के बाद, अर्थव्यवस्था का व्यवस्थित संगठन उस समय की सरकार के लिए एक वास्तविक चुनौती थी। विकास और विकास देने की आवश्यकता राजनीतिक नेतृत्व के सामने भारी मांग में थी – क्योंकि देश राष्ट्रीय उत्साह के वादों और वाइब्स पर सवार था।

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। विश्व बैंक ने कम शक्ति समानता के आधार पर भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था घोषित किया है।

अर्थव्यवस्था के मुख्यतः तीन क्षेत्रक है प्राथमिक क्षेत्रक – इसके अंतर्गत कृषि, पशुपालन, मतस्य पालन, डेयरी और वनों से प्राप्त वस्तुएं आती हैं। द्वितीयक क्षेत्रक— इसके अंतर्गत उद्योग खनिज व्यवसाय विनिर्माण कार्य आदि आते हैं। विश्व में तीन प्रकार की अर्थव्यवस्था होती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, समाजवादी अर्थव्यवस्था, मिश्रित अर्थव्यवस्था

### II उद्देश्य तथा शोध विधि

#### (क) उद्देश्य

- भारतीय अर्थव्यवस्था का जीडीपी पर प्रभाव
- राजकोषीय नीति का विश्लेषण
- विभिन्न क्षेत्रों के प्रभाव का आर्थिक विश्लेषण

#### (ख) शोधविधि

इस विधि के वित्तीय समंक के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था का वर्ष 2017 से 2021 तक समीक्षात्मक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया जिसमें सहसंबंध के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर जीडीपी का अध्ययन किया गया।

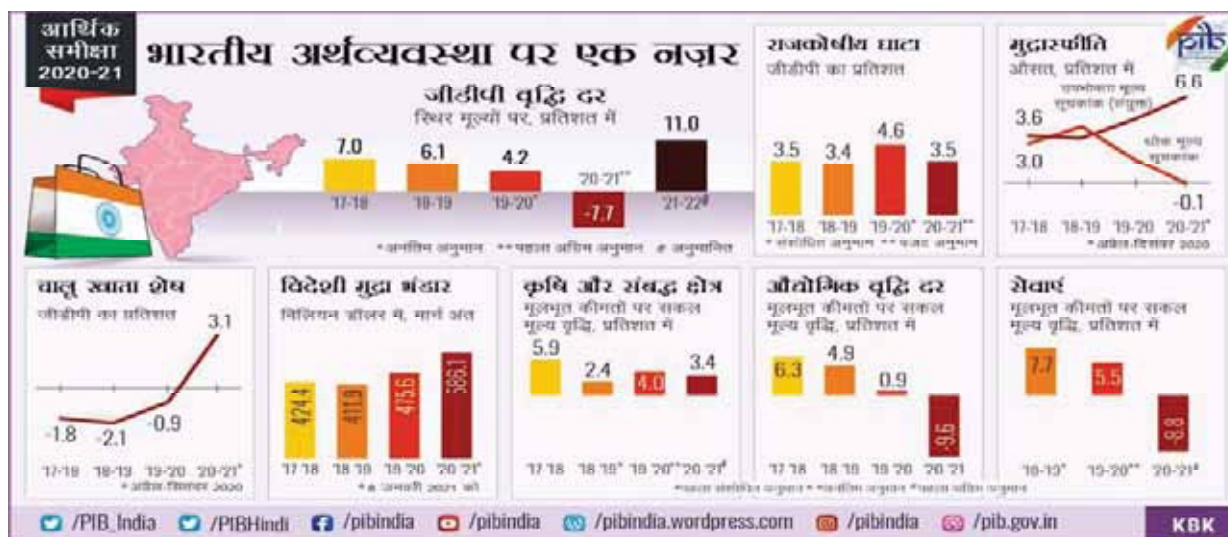


Fig No.1 Source :Trading Economics. India Gdp Growth Rate

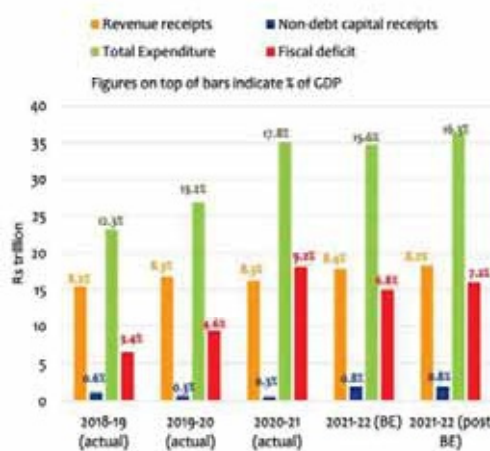


Fig No. 2 Source: Trading Economics. India Gdp Growth Rate

### III भारत की आर्थिक रणनीति

#### (क) राजकोषीय घाटा

महामारी लॉकडाउन ने आर्थिक गतिविधियों को एक हद तक रोक दिया है। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन में गिरावट आई है साथ ही, मांग में भी गिरावट आई है।

मांग में गिरावट का सामना करते हुए, राजकोषीय घाटे को बढ़ाना उचित है। सरकार ने पिछले साल राजकोषीय घाटे को बढ़ाकर 3.5 करने की अनुमति दी थी। भारत को राजकीय कर्ज में चूक से बचने के लिये टनों सोना गिरवी रखना पड़ा।

भारत के पास महत्वपूर्ण आयातों का भुगतान करने के लिये विदेशी मुद्रा लगभग समाप्त हो गई थी। वर्तमान में अर्थव्यवस्था तीव्र गति से सिकुड़ रही है, केंद्र सरकार राज्यों के प्रति अपनी राजस्व प्रतिबद्धताओं में चूक कर रही है।

भारत में आर्थिक स्तर पर वित्तीय अनुशासन की कमी रही है, जबकि आर्थिक शक्ति बनने के लिये देश में आर्थिक अनुशासन का वातावरण अनिवार्य रूप से होना चाहिये।

वित्तीय बढ़ता राजकोषीय घाटा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, क्योंकि इससे ब्याज दरों के साथ-साथ मुद्रास्फीति दर (महंगाई) भी बढ़ती है।

इसीलिये भारतीय परिस्थितियों के मद्देनजर अर्थशास्त्री राजकोषीय घाटे को कम-से-कम रखने पर जोर देते हैं।

#### (ख) निवेश

अप्रैल-अक्तूबर 2020 के दौरान 27.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आया, जो कि वित्त वर्ष 2019-20 के पहले सात महीने की तुलना में 14.8 प्रतिशत अधिक है। नवंबर 2020 में कुल विदेशी पोर्टफोलियो निवेश प्रवाह 9.8 बिलियन डॉलर रहा, जो कि किसी महीने में सर्वाधिक है।

यदि अर्थव्यवस्था को वास्तव में मजबूती देनी है तो निजी निवेश को बढ़ावा देना होगा। केवल सरकारी निवेश से भारत जैसे लोक-कल्याणकारी देश में विकास को गति दे पाना लगभग असंभव है।

अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिये सरकार को प्रोत्साहन पैकेज के साथ-साथ निजी निवेश को बढ़ावा देने की खातिर पूंजी व्यय बढ़ाने पर भी विचार करना चाहिये।

निजी निवेश को बाधित कर रही हैं। कई परियोजनाएँ जो रुकी हुई हैं, उन पर काम शुरू होना सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ बैंकिंग प्रणाली के पुनर्पूँजीकरण पर पर्याप्त ध्यान देने की जरूरत है, ताकि निवेश के लिये अतिरिक्त कर्ज उपलब्ध कराया जा सके।

#### (ग) सेवा क्षेत्र

भारत के सकल मूल्यवर्द्धित के 54 प्रति से अधिक तथा कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का लगभग 4.5वाँ हिस्सा सेवा क्षेत्र से ही आता है। कुल निर्यात में सेवा क्षेत्र का 48 प्रतिशत हिस्सा है। मुख्य संकेतक, जैसे कि सर्विसेज-परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स, रेल फ्रेट ट्रैफिक और पोर्ट ट्रैफिक आदि सभी लॉकडाउन के दौरान तेज गिरावट के बाद 'ट-शेड' रिकवरी कर रहे हैं। स्टार्ट-अप: कोविड-19 महामारी के बीच भारतीय स्टार्ट-अप इकोसिस्टम अच्छी प्रगति कर रहा है, इस वर्ष 38 नए स्टार्ट-अप के साथ पिछले वर्ष इस सूची में 12 स्टार्ट-अप जुड़े। अंतरिक्ष क्षेत्र: भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र पिछले छह दशकों में काफी तेजी से आगे बढ़ा है। निजी उद्यमियों को शामिल करने के लिये अंतरिक्ष इकोसिस्टम ने अनेक नीतिगत सुधार किये हैं और नवोन्मेष तथा निवेश को आकर्षित किया है।

#### (घ) कृषि वृद्धि

कोविड-19 के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को हुए नुकसान को कम करने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिसकी विकास दर वित्त वर्ष 2021 के लिये 3.4 प्रतिशत आँकी गई है।

देश के सकल मूल्यवर्द्धन में कृषि और सहायक क्षेत्रों की हिस्सेदारी वर्ष 2019-20 के लिये स्थिर मूल्यों पर 17.8 प्रतिशत रही।

#### (च) कृषि क्षेत्र की चुनौतियाँ

- वर्तमान में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान बहुत अधिक नहीं है, फिर भी कृषि उत्पादन में गिरावट विकास दर को निश्चित ही प्रभावित करती है।
- स्वतंत्रता के समय देश की जीडीपी में कृषि का हिस्सा लगभग 50 प्रतिशत था, जो अब घटकर केवल 14 प्रतिशत रह गया है।
- सर्वाधिक उत्पादकता वाले इस क्षेत्र पर देश की लगभग 58 प्रतिशत जनसंख्या निर्भर करती है।
- घटी हुई विकास दर न केवल कृषि पर निर्भर देश के 14 करोड़ से अधिक परिवारों को प्रभावित करती है, बल्कि आम आदमी भी महँगाई से परेशान हो जाता है।
- देश की बहुत बड़ी आबादी रोजगार के लिये खेती-किसानी से जुड़ी हुई है, इसलिये कृषि में किसी भी प्रकार की गिरावट रोजगार संकट को भी बढ़ा देती है।

#### (छ) औद्योगिक विकास

- औद्योगिक विकास के सूचकांक के मुताबिक देश के औद्योगिक क्षेत्र में मार्च 2021 में 22.35 प्रतिशत की दर से विकास किया। ये आंकड़ा बहुत अधिक है, जब इस सूचकांक की तुलना महामारी से पहले के दौर में औद्योगिक विकास के आंकड़ों से की गई,
- मार्च 2019 की तुलना में मार्च 2021 में औद्योगिक विकास में असल में 0.5 प्रतिशत की कमी आई थी। इसी तरह, अप्रैल 2021 में व्यापारिक वस्तुओं का निर्यात 197 प्रतिशत बढ़ा था।
- ये आंकड़ा पिछले वर्ष अप्रैल के आंकड़ों को आधार बनाकर निकाला गया है। लेकिन, अगर हम महामारी से पहले के विदेशी निर्यात के आंकड़ों को आधार बनाएं, तो अप्रैल 2021 में विदेशी व्यापार की विकास दर महज 16 प्रतिशत रही थी।
- घरेलू परिस्थितियों के कारण औद्योगिक गतिविधियों में कमी दर्ज की गई। इसके बावजूद निर्यात की वृद्धि फिर भी होती रही, क्योंकि वैश्विक स्तर पर मांग बढ़ी है

#### (ज) वित्तीय बाजार पर प्रभाव:

वित्तीय बाजार को अत्यधिक अस्थिर देखा जाता है जिससे भारी गिरावट आती है धन का क्षरण, भविष्य की अनिश्चित परिस्थितियों के कारण शेयर बाजार की बर्बादी खपत के स्तर में गिरावट के लिए जिम्मेदार है। 12 मार्च, 2020 काला दिन था क्योंकि घरेलू इक्विटी बाजारों में महत्वपूर्ण गिरावट आई थी।

बीएसई और एनएसई दोनों एक ही दिन में 8 फीसदी से ज्यादा लुढ़क गए। बीएसई में 2919 अंकों की गिरावट। एनएसई निफ्टी में सेंसेक्स और 868 अंक की गिरावट। यह गिरावट नियमित रूप से आज तक स्टॉक के रूप में हुई है कोविड-19 के बढ़ते मामलों के बीच निवेशकों ने लगातार बिकवाली का सहारा लिया। भारतीय शेयर बाजार 19 मार्च, 2020 को फिर से एक नए निचले स्तर पर पहुंच गया। बीएसई सेंसेक्स 581 अंक के निचले स्तर 28,288 पर बंद हुआ और एनएसई निफ्टी 205 अंक गिरकर 8236 पर बंद हुआ। निवेशकों की अस्थिरता और संपत्ति का क्षरण है।

#### IV भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख चुनौतियाँ

(क) विमुद्रीकरण, मौद्रिक नीति का नया ढाँचा, मुद्रास्फीति नियोजन, वित्तीय संघवाद और बाहरी क्षेत्रों के बदलाव के साथ-साथ जीएसटी के कार्यान्वयन के चलते पिछले कुछ समय में भारतीय अर्थव्यवस्था को चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

(ख) औद्योगिक उत्पादन, निवेश, उपभोग और कारोबारी माहौल पर पड़ा, जो अब धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। इसके अलावा लम्बे समय से राज्यों का असमान आर्थिक विकास भी देश की अर्थव्यवस्था के लिये एक बड़ी चुनौती बना रहा है।

(ग) जब दुनिया की प्रमुख वित्तीय संस्थाएँ भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना विश्वास प्रदर्शित कर रही हैं, उसी समय विश्व बैंक ने भी अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि 2018 में भारत विश्व में सबसे तेज विकास करने वाली अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

(घ) विश्व बैंक ने 'ग्लोबल इकॉनॉमिक प्रॉस्पेक्ट्स रिपोर्ट' में 2018-19 में भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर 7.3 प्रतिशत होने का अनुमान जताया है।

इन सभी वित्तीय संस्थाओं का मानना है कि विमुद्रीकरण और जीएसटी का विपरीत प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था पर अवश्य पड़ा था, लेकिन अब स्थिति धीरे-धीरे नियंत्रण में आने लगी है।

## V भारत की अर्थव्यवस्था

आईएमएफ ने अपनी इस रिपोर्ट में भारत की विकास दर वित्त वर्ष 2017-18 में 6.7 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है। भारत के सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय ने इसके 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। भारत की विकास दर 2018-19 में 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। आईएमएफ का भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर यह अनुमान विश्व बैंक द्वारा इस महीने की शुरुआत में लगाए गए अनुमान 7.3 प्रतिशत से भी अधिक है। भारत उभरती अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा। भारत के 2018 और 2019 के लिये विकास दर के अनुमान में अक्टूबर 2017 के अनुमान की तुलना में कोई बदलाव नहीं किया गया है। आईएमएफ ने उस समय समान अवधि में चीन की वृद्धि दर क्रमशः 6.6 प्रतिशत और 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है, जबकि पिछले वर्ष चीन दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था थी और उसकी वृद्धि दर 6.8 प्रतिशत रही थी। आईएमएफ ने कहा कि उभरते बाजारों तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिये 2018 और 2019 में कुल वृद्धि दर के अनुमान में कोई बदलाव नहीं किया है। विश्व अर्थव्यवस्था वृद्धि दर 2018 और 2019 में 3.9 प्रतिशत रहेगी। वैश्विक आर्थिक गतिविधियों की वृद्धि दर 3.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। यह पहले के अनुमानों से 0.1 प्रतिशत अधिक है और 2016 के प्रदर्शन से 0.5 प्रतिशत अधिक है। वैश्विक वृद्धि दर में व्यापक बढ़ोतरी देखने को मिल रही है, इसके मद्देनजर आईएमएफ ने 2018 और 2019 में वैश्विक वृद्धि दर के अनुमान को क्रमशः 0.2 प्रतिशत बढ़ाकर 3.9 प्रतिशत कर दिया है।

## VI निष्कर्ष

अर्थव्यवस्था की स्थिति खराब हो गई थी। लंबे समय तक देशव्यापी तालाबंदी, वैश्विक आर्थिक मंदी और मांग और आपूर्ति श्रृंखला के संबंधित व्यवधान के साथ, अर्थव्यवस्था को मंदी की लंबी अवधि का सामना करने की संभावना है। आर्थिक प्रभाव की भयावहता स्वास्थ्य संकट की अवधि और गंभीरता, लॉकडाउन की अवधि और लॉकडाउन हटने के बाद स्थिति के सामने आने के तरीके पर निर्भर करेगी।

सर्वाधिक तेज विकास दर के बावजूद विश्व के अन्य कई देशों की तरह ही भारत की अर्थव्यवस्था भी कई मोर्चों पर चुनौतियों का सामना कर रही है। कृषिगत, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की चिंताजनक स्थिति, रोजगार सृजन की चुनौतियाँ और कई आर्थिक क्षेत्रों में कमजोर प्रदर्शन भारत की मुख्य समस्याएँ हैं। आर्थिक वृद्धि की राह पर तेजी से आगे बढ़ते भारत के कदमों को कई बार ये तीनों ही चुनौतियाँ एक साथ या बारी-बारी से जकड़ लेती हैं। अर्थव्यवस्था, रोजगार और कृषि क्षेत्र तीनों ही किसी भी तंत्र द्वारा बेहतर कार्य निष्पादन क्षमता के लिये हैं इसके सभी अंग एक-दूसरे से समन्वित ढंग से जुड़े हों। जिस प्रकार मानव शरीर में हृदय, रक्त और धमनियों के मध्य आपसी समन्वय से शरीर के प्रत्येक कोने में रक्त का संचार होता है, ठीक उसी प्रकार से अर्थव्यवस्था, समाज और कृषि को एक साथ मिलाकर ही हम वास्तविक संवृद्धि पा सकते हैं। समस्या यह भी है कि आर्थिक विकास के इन घटकों का हम अलग-अलग अध्ययन करते हैं, अर्थशास्त्री केवल अर्थव्यवस्था की चिंता करता है और समाजशास्त्री सामाजिक चिंताओं की बात करता है। विकास की गति बनाए रखने के लिये प्रचलित तरीकों में बदलाव लाते हुए एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने की आवश्यकता है जो इन्हें एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायी बना सके।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम राष्ट्र की संपत्ति हैं और यह सुनिश्चित करने के लिये यह संपत्ति आम जनमानस के हाथों में होनी चाहिये, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और उद्यमों में जन-स्वामित्व को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। इसके लिये सरकार इनमें विनिवेश का रास्ता चुनती है, जिससे उसके पास अतिरिक्त धन की उपलब्धता हो जाती है, जिसे सामाजिक योजनाओं और विकास कार्यों पर खर्च किया जा सकता है।

## REFERENCE

- [1] Bruno, & M and W Easterly. (1998). 'Inflation Crisis and Long Run Growth. Journal of Monetary Economics, 41.
- [2] Denison, E.F. (1981). International Transactions in Measures of the Nation's Production. Survey of Current Business, 61(5), pp. 17-28.
- [3] DR.S.JAMUNA. (2016, April). INFLATION AND ITS IMPACT ON INDIAN. International Journal of Application or Innovation in Engineering & Management (IJAEM), 5(4).
- [4] Feldstein, M. (1997). The Costs and Benefits of Going from Low Inflation to Price Stability. (Christina D. R., & David H. R., Eds.) In Reducing Inflation: Motivation and Strategy, pp. 123-156.
- [5] Fischer, S. (1981). Towards an Understanding of the Costs of Inflation. Carnegie Rochester Conference Series on Public Policy, 15, pp. 5-42.

- [6] Ghosh, Atish, & Steven Phillips. (1998, May). "Inflation, Disinflation, and Growth". IMF Working Paper.
- [7] Hall, R. E., & Jones, C. I. (2007). The Value of Life and the Rise in Health Spending. Quarterly Journal of Economics, 122(1), pp. 39-72.
- [8] Judson, Ruth, Orphanides, & Athanasios. (1996). "Inflation, Volatility and Growth". Board of Governors of the Federal Reserve System, Finance and Economics.
- [9] Reserve Bank of India. (2016). National Income, Saving and Employment. Retrieved January 22, 2017, from <https://www.rbi.org.in/SCRIPTS/PublicationsView.aspx?id=17134>.
- [10] Reserve Bank of India. (2016). Output and Prices. Retrieved January 22, 2017, from <https://www.rbi.org.in/SCRIPTS/PublicationsView.aspx?id=17174>
- [11] Sarel, M. (1996). Non linear affects of inflation on economic growth. IMF Working Staff Papers, 43(1), pp. 199-215.
- [12] Tobin, J. (1965, October). "Money and Economic Growth". Econometrica, 33 (4), 671-684.
- [13] Trading Economics. (2016). INDIA GDP GROWTH RATE. Retrieved January 21, 2017, from <http://www.tradingeconomics.com/india/gdp-growth> annual. [18]. WORLD BANK GROUP. (2016). WORLD BANK. Retrieved January 25, 2017, from <http://data.worldbank.org/indicator/NY.GDP.MKTP.KD.ZG?view=chart>. [19]. Z.A. Khan, A.Farooq, &